NEERAJ®

M.H.D. - 10

प्रेमचन्द की कहानियाँ

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Archana Sisodia,* **M.A., M.Phil., Ph.D. (Hindi)**

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Retail Sales Office:

1507, First Floor, Nai Sarak, Delhi - 6 | Mob.: 8510009872, 8510009878
E-mail : info@neerajbooks.com Website : www.neerajbooks.com

MRP ₹ 300/-

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

(Publishers of Educational Books)

Retail Sales Office: 1507, First Floor, Nai Sarak, Delhi - 6 | Mob.: 8510009872, 8510009878

E-mail : info@neerajbooks.com Website : www.neerajbooks.com

© Copyright Reserved with the Publishers only.

Reprint Edition with Updation of Sample Question Paper Only

Typesetting by: Competent Computers, Printed at: Novelty Printing Press

Disclaimer/T&C

1. *For the best & up-to-date study & results, please prefer the recommended textbooks/study material only.*
2. *This book is just a Guide Book/Reference Book published by NEERAJ PUBLICATIONS based on the suggested syllabus by a particular Board/University.*
3. *These books are prepared by the author for the help, guidance and reference of the student to get an idea of how he/she can study easily in a short time duration. Content matter & Sample answers given in this Book may be Seen as the Guide/Reference Material only. Neither the publisher nor the author or seller will be responsible for any damage or loss due to any mistake, error or discrepancy as we do not claim the Accuracy of these Solutions/Answers. Any Omission or Error is highly regretted though every care has been taken while preparing, printing, composing and proofreading of these Books. As all the Composing, Printing, Publishing and Proof Reading, etc., are done by Human only and chances of Human Error could not be denied. Any mistake, error or discrepancy noted may be brought to the publishers notice which shall be taken care of in the next edition and thereafter as a good gesture by our company he/she would be provided the rectified Book free of cost. Please consult your Teacher/Tutor or refer to the prescribed & recommended study material of the university/board/institute/ Govt. of India Publication or notification if you have any doubts or confusions regarding any information, data, concept, results, etc. before you appear in the exam or Prepare your Assignments before submitting to the University/Board/Institute.*
4. *In case of any dispute whatsoever the maximum anybody can claim against NEERAJ PUBLICATIONS is just for the price of the Book.*
5. *The number of questions in NEERAJ study materials are indicative of general scope and design of the question paper.*
6. *Any type of ONLINE Sale/Resale of "NEERAJ BOOKS" published by "NEERAJ PUBLICATIONS" in Printed Book format (Hard Copy), Soft Copy, E-book on any Website, Web Portals, any Social Media Platforms – Youtube, Facebook, Twitter, Instagram, Telegram, LinkedIn etc. and also on any Online Shopping Sites, like – Amazon, Flipkart, eBay, Snapdeal, Meesho, Kindle, etc., is strictly not permitted without prior written permission from NEERAJ PUBLICATIONS. Any such online sale activity of any NEERAJ BOOK in Printed Book format (Hard Copy), Soft Copy, E-book format by an Individual, Company, Dealer, Bookseller, Book Trader or Distributor will be termed as ILLEGAL SALE of NEERAJ BOOKS and will invite legal action against the offenders.*
7. *The User agrees Not to reproduce, duplicate, copy, sell, resell or exploit for any commercial purposes, any portion of these Books without the written permission of the publisher. This book or part thereof cannot be translated or reproduced in any form (except for review or criticism) without the written permission of the publishers.*
8. *All material prewritten or custom written is intended for the sole purpose of research and exemplary purposes only. We encourage you to use our material as a research and study aid only. Plagiarism is a crime, and we condone such behaviour. Please use our material responsibly.*
9. *All matters, terms & disputes are subject to Delhi Jurisdiction only.*

Get books by Post & Pay Cash on Delivery :

If you want to Buy NEERAJ BOOKS by post then please order your complete requirement at our Website www.neerajbooks.com where you can select your Required NEERAJ BOOKS after seeing the Details of the Course, Subject, Printed Price & the Cover-pages (Title) of NEERAJ BOOKS.

While placing your Order at our Website www.neerajbooks.com You may also avail the "Special Discount Schemes" being offered at our Official website www.neerajbooks.com.

No need to pay in advance as you may pay "Cash on Delivery" (All The Payment including the Price of the Book & the Postal Charges, etc.) are to be Paid to the Delivery Person at the time when You take the Delivery of the Books & they shall Pass the Value of the Goods to us. We usually dispatch the books Nearly within 2-3 days after we receive your order and it takes Nearly 3-4 days in the postal service to reach your Destination (In total it take nearly 6-7 days).

Content

प्रेमचन्द की कहानियाँ

Question Paper—June-2023 (Solved) 1-3
Question Paper—December-2022 (Solved) 1-3
Question Paper—Exam Held in March-2022 (Solved) 1-3
Question Paper—Exam Held in August-2021 (Solved) 1-3
Question Paper—Exam Held in February-2021 (Solved) 1-3
Question Paper—December, 2019 (Solved) 1-3
Question Paper—June, 2019 (Solved) 1-3
Question Paper—December, 2018 (Solved) 1-3
Question Paper—June, 2018 (Solved) 1-2

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

1. भारतीय स्वाधीनता आंदोलन और प्रेमचन्द की कहानियाँ 1

2. स्त्री जीवन और प्रेमचन्द 8

3. दलित जीवन और प्रेमचन्द 17

4. किसान समस्या, साम्प्रदायिकता की समस्या और प्रेमचंद 23

5. प्रेमचन्द की कहानी-कला 31

6. प्रेमचन्द की कहानियां और हिन्दी आलोचना 44

7. मनोवृत्ति : विश्लेषण और मूल्यांकन 54

8. बूढ़ी काकी : विश्लेषण और मूल्यांकन 62

9. बेटों वाली विधवा : विश्लेषण और मूल्यांकन 72

10. नमक का दारोगा : विश्लेषण और मूल्यांकन 82

11. विध्वंस : विश्लेषण और मूल्यांकन 90

12. गुल्ली डंडा : विश्लेषण और मूल्यांकन 98

13. जुलूस : विश्लेषण और मूल्यांकन 106

14. समर यात्रा : विश्लेषण और मूल्यांकन 118

15. सुजान-भगत : विश्लेषण और मूल्यांकन 127

16. दो बैलों की कथा : विश्लेषण और मूल्यांकन 135

17. सवा सेर गेहूँ : विश्लेषण और मूल्यांकन 143

18. सद्‌गति : विश्लेषण और मूल्यांकन 150

19. कफन : विश्लेषण और मूल्यांकन 156

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2023

(Solved)

प्रेमचंद की कहानियां

M.H.D.-10

समय : 2 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 50*

नोट : *प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। शेष प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

प्रश्न 1. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं दो की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए–

(क) कुछ देर तक तो वह जब्त किए बैठी रही; पर अंत में रहा न गया। स्वायत्त शासन उसका स्वभाव हो गया था। वह क्रोध में भरी हुई आयी और कामतानाथ से बोली–क्या आटा तीन ही बोरे लाये? मैंने तो पांच बोरे के लिए कहा था। और घी भी पांच ही टिन मंगवाया। तुम्हें याद है, मैंने दस कनस्तर कहा था? किफायत को मैं बुरा नहीं समझती; लेकिन जिसने यह कुआं खोदा उसी की आत्मा पानी को तरसे, यह कितनी लज्जा की बात है।

उत्तर–संदर्भ–प्रस्तुत गद्यांश प्रेमचंद की कहानी 'बेटों वाली विधवा' से लिया गया है। अपने पति के जीवित रहते फूलमती का घर में पूरा रौब चलता था। बेटे-बहुएँ सब उसका कहा मानते थे। किंतु पति की मृत्यु के बाद घर में उसका मान-सम्मान समाप्त हो गया। बेटे-बहुएँ उसका अपमान करते थे। बेटी की शादी में बेटे उससे कुछ नहीं पूछ रहे थे। यह सब देखकर वह कुछ समय तो बर्दाश्त करती है, किंतु उसके बाद गुस्से से फूट पड़ती है।

व्याख्या–फूलमती बेटों की कंजूसी एवं छल को देखकर कुछ देर तो सब्र करके बैठी रही, किंतु उससे बर्दाश्त नहीं हुआ क्योंकि अभी तक वह घर में स्वायत्त शासन चलाती रही थी। अब बेटे उसे पूछ भी नहीं रहे थे। इससे वह क्रोध में भरकर कामतानाथ से बोली कि मैंने पांच बोरे आटा मँगवाया था, तुम तीन बोरे ही क्यों लाए? घी के दस की जगह पाँच कनस्तर ही क्यों मँगवाए? तुमने किफायत के नाम पर मनमानी की है। यह सब तुमने नहीं कमाया, तुम्हारे पिता ने कमाया और मुझे अधिकार दिया घर चलाने का, फिर तुम लोगों ने मुझे ही नजरदांज कर दिया। यह तो वही बात हुई कि जो कुआं खोदे, वही पानी को तरसे।

विशेष–1. तत्कालीन समाज एवं परिवार में नारी की हीन स्थिति का चित्रण है।

2. स्वार्थ और लालच में व्यक्ति संबंधों की भी परवाह नहीं करता।

3. भाषा व्यंग्यात्मक है।

(ख) पंडित अलोपीदीन का लक्ष्मीजी पर अखण्ड विश्वास था। वह कहा करते थे कि संसार का तो कहना ही क्या स्वर्ग में भी लक्ष्मी का ही राज्य है। उनका यह कहना यथार्थ ही था। न्याय और नीति सब लक्ष्मी के ही खिलौने हैं, इन्हें वह जैसे चाहती हैं, नचाती हैं। लेटे ही लेटे गर्व से बोले, चलो हम आते हैं। यह कहकर पंडितजी ने बड़ी निश्चिन्तता से पान के बीड़े लगाकर खाये। फिर लिहाफ ओढ़े हुए दारोगा के पास आकर बोले, बाबूजी आशीर्वाद! कहिए, हमसे ऐसा कौन-सा अपराध हुआ कि गाड़ियाँ रोक दी गयीं। हम ब्राह्मणों पर तो आपकी कृपा-दृष्टि रहनी चाहिए।

उत्तर–संदर्भ–प्रस्तुत गद्यांश प्रेमचंद की कहानी 'नमक का दरोगा' से लिया गया है। वंशीधर ने नमक के दरोगा के रूप में अलोपीदीन की गाड़ियां रोक ली। अलोपीदीन मानते थे कि धन के बल पर सब खरीदा जा सकता है। व्यक्ति का ईमान भी धन से बिकता है। यही सोचकर वे निश्चित होकर वंशीधर से बात करने जाते हैं।

व्याख्या–पंडिल अलोपीदीन को धन की महिमा पर बहुत विश्वास था। उनका मानना था कि धरती से स्वर्ग तक सभी जगह धन का बल कार्य करता है। यह सही भी था, क्योंकि न्याय और कानून धनी लोगों के अनुसार चल रहे थे। इसी कारण गाड़ियां पकड़े जाने की खबर पाकर भी अलोपीदीन विचलित नहीं होते और वहां पहुँचने की बात कहकर तसल्ली से पान खाते हैं। फिर ठंड के कारण लिहाफ ओढ़कर दरोगा के पास जाकर खुशामदी अंदाज में बोलते हैं कि आपने किस अपराध में हमारी गाड़ियां रोक ली हैं। हम ब्राह्मण हैं। इस कारण भी हमारे साथ नरम व्यवहार करना चाहिए।

विशेष–1. सरकारी विभागों में फैले भ्रष्टाचार को उजागर किया है।

2. वर्ण व्यवस्था में ब्राह्मणों द्वारा स्वयं को ऊँचा सिद्ध करने पर व्यंग्य है।

3. भाषा व्यंग्यपूर्ण है।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

(ग) आज दोनों के सामने फिर वही सूखा भूसा लाया गया। दोनों चुपचाप खड़े रहे। घर के लोग भोजन करने लगे। उस वक्त छोटी-सी लड़की दो रोटियाँ लिए निकली और दोनों के मुँह में देकर चली गयी। उस एक रोटी से इनकी भूख तो क्या शान्त होती; पर दोनों के हृदय को मानो भोजन मिल गया। यहां भी किसी सज्जन का वास है। लड़की भैरों की थी। उसकी माँ मर चुकी थी। सौतेली माँ उसे मारती रहती थी, इसलिए इन बैलों से उसे एक प्रकार की आत्मीयता हो गयी थी।

उत्तर–संदर्भ–प्रस्तुत गद्यांश प्रेमचंद की कहानी 'दो बैलों की कथा' से लिया गया है। झूरी के दोनों बैलों को गया के घर में सूखा भूखा डाला जाता था और उन्हें खूब काम करवाकर भी मारा-पीटा जाता था। गया के घर में छोटी लड़की उन्हें प्यार करती थी और कुछ खाने को भी देती थी। इससे दोनों बैलों को तृप्ति मिल जाती थी।

व्याख्या–गया के घर में रोज की तरह हीरा-मोती के सामने सूखा भूखा डाला गया, किंतु दोनों बैलों ने कुछ नहीं खाया और चुपचाप खड़े रहे। घर के सभी लोग भोजन करने लगे। उस घर में रहने वाली एक छोटी लड़की दो रोटियां चुपके से लाती है और दोनों बैलों को एक-एक रोटी खिला देती है। एक रोटी से बैलों की भूख तो नहीं मिटी, परंतु छोटी बच्ची के प्रेम से दोनों का हृदय शांत हो गया। उन्हें ज्ञात हो गया कि दुर्जनों के बीच एक सज्जन का भी वास है। वह छोटी लड़की भैरों की बेटी थी। उसकी सौतेली माँ उसे सताती रहती थी। इसी कारण उसे दोनों बैलों से अपनापन हो गया था।

विशेष–1. मूक प्राणी भी प्रेम और अपनेपन की भाषा समझते हैं।

2. लोगों की बढ़ती संवेदनहीनता को दिखाया है।

3. एक दुखी ही दूसरे दुखी का दुख समझ सकता है।

4. भाषा सहज-सरल है।

(घ) लेकिन सुभागी यों चुपचाप बैठने वाली स्त्री न थी। वह क्रोध से भरी हुई कालिकादीन के घर गयी और उसकी स्त्री को खूब लथेड़ा–कल का बानी आज का सेठ, खेत जोतने चले हैं। देखें, कौन मेरे खेत में हल ले जाता है? अपना और उसका लोहू एक कर दूँ। पड़ोसियों ने उसका पक्ष लिया, सब तो हैं, आपस में यह चढ़ा ऊपरी नहीं करना चाहिए। नारायण ने धन दिया, तो क्या गरीबों को कुचलते फिरेंगे। सुभागी ने समझा, मैंने मैदान मार लिया। उसका चित्त शांत हो गया। किन्तु वही वायु जो पानी में लहरें पैदा करती है, वृक्षों को जड़ से उखाड़ डालती है।

उत्तर–संदर्भ–प्रस्तुत गद्यांश प्रेमचंद की कहानी 'बलिदान' से लिया गया है। हरखू के खेत गिरवी थे। वह उन पर ठेके पर खेती करता था, किंतु गांव का महाजन उसके खेत हड़पने के इरादे के हरखू से कहता है कि उसे दूसरा व्यक्ति खेत जोतने के अधिक पैसे के साथ नजराना भी दे रहा है। तुम नजराने के रुपये नहीं दोगे, तो खेत किसी दूसरे को दे दिए जाएंगे। यह सुनकर हरखू की पत्नी सुभागी क्रोधित होकर कालिकादीन के घर जाती है।

व्याख्या–अपने खेत किसी दूसरे को जोतने की बात सुनने पर सुभागी क्रोध से भरकर कालिकादीन के घर जाती है और उसकी पत्नी को खूब खरी-खोटी सुनाती है। वह कालिकादीन पर व्यंग्य करते हुए कहती है कि कल का बनिया, आज सेठ बनकर खेत जोतने की बात करता है। वह क्रोध में कहती है कि यदि कोई दूसरा उसके खेत मे हल चलाएगा, तो वह खून बहाने को भी तैयार है। पड़ोसियों ने भी सुभागी का पक्ष लिया। पड़ोसी कहते हैं कि यदि ईश्वर धन दे रहा है, तो गरीबों को सताने का अधिकार नहीं मिल जाता। पड़ोसियों की बात सुनकर सुभागी उसे अपनी जीत मानने लगी। किंतु वह भूल गई कि जो वायु पानी में लहरें उठाती हैं, वहीं वृक्षों को जड़ से उखाड़ भी देती है अर्थात शक्तिशाली लोग समय आने पर पलटवार अवश्य करते हैं।

विशेष–1. तत्कालीन ग्रामीण समाज में किसान के शोषण का यथार्थ चित्रण है।

2. मानव स्वभाव का चित्रण है कि वह अवसर पाकर पक्ष बदल लेता है।

3. उदाहरण देकर तथ्य स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। इससे दार्शनिकता का पुट भी आ गया है।

4. भाषा बोलचाल की है। देशज शब्दों की बहुलता है।

प्रश्न 2. प्रेमचंद के स्त्री संबंधी दृष्टिकोण का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-11, प्रश्न 1

प्रश्न 3. प्रेमचंद की कहानियों के माध्यम से उनकी किसान संबंधी दृष्टि का मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-23, 'किसान समस्या और प्रेमचंद', पृष्ठ-28, प्रश्न 2

प्रश्न 4. 'सद्गति' कहानी का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-18, पृष्ठ-151, 'कहानी का विश्लेषण'

प्रश्न 5. 'गुल्ली-डण्डा' कहानी की समीक्षा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-12, पृष्ठ-98, 'परिचय', पृष्ठ-102, प्रश्न 2, पृष्ठ-103, प्रश्न 3, पृष्ठ-105, प्रश्न 5

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

ww.neerajbooks.com

प्रेमचन्द की कहानियाँ

भारतीय स्वाधीनता आंदोलन और प्रेमचन्द की कहानियाँ

1

परिचय

प्रेमचंद ने लगभग तीन सौ से अधिक कहानियां लिखीं हैं तथा इनमें उन्होंने विविध विषयों की अपनी रचना का केन्द्र बनाया है, जिसमें प्राय: स्वाधीनता से संबंधित इनकी कहानियां विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। उनकी इन्हीं कहानियों के आधार पर उनके पुत्र अमृतराय ने उन्हें स्वाधीनता आंदोलन के एक प्रतिबद्ध सिपाही की संज्ञा 'कलम का सिपाही' नामक उनकी जीवनी में दी है। प्रेमचन्द ने अपनी स्वाधीनता से संबंधित इन प्रमुख कहानियों में स्वतंत्रता आंदोलन के मार्मिक चित्रण के साथ ही 'स्वाधीनता' का एक व्यापक अर्थ ग्रहण करते हुए इसे अन्य राष्ट्रवादियों से नितांत अलग रूप में जाना व समझा है।

अध्याय का विहंगावलोकन

स्वाधीनता का आशय

स्वाधीनता प्राप्ति केवल प्रेमचन्द के लेखन का उद्देश्य न होकर उनके जीवन का मुख्य उद्देश्य बनकर उभरा था, जिसके माध्यम से उन्होंने अपने साहित्य के अधिकांश भाग में स्वाधीनता आंदोलन के आंतरिक तथा बाह्य पक्षों की अत्यधिक सूक्ष्म जांच-पड़ताल की थी। अत: स्वाधीनता का संदर्भ प्रेमचन्द के लेखन का वह मूल तत्त्व है, जिसके कारण वे प्रारंभ से ही पूर्ण स्वराज के पक्षधर रहे थे और उनकी इस स्वराज की अवधारणा की पृष्ठभूमि में प्राय: देश के शोषित, वंचित तथा पीड़ित लोगों की वाणी मुखर होती थी। अत: प्रेमचंद की स्वाधीनता संबंधी जिन रचनाओं से जो मुख्य तथ्य उजागर होते हैं, उनके आधार पर प्रेमचन्द ने स्वाधीनता को इन निम्नलिखित आशयों के रूप में ग्रहण किया था

उपनिवेशवाद से मुक्ति

प्रेमचन्द के लेखन में स्वाधीनता का सर्वप्रथम और महत्त्वपूर्ण आशय अंग्रेजों की गुलामी से भारत की मुक्ति कराना था तथा वे किसी भी कीमत पर भारत को अंग्रेजी गुलामी से मुक्त देखना चाहते थे, क्योंकि वे यह मानते थे कि गुलामी सबसे बड़ा अभिशाप है।

किसानों की स्वाधीनता

स्वाधीनता का दूसरा आशय प्रेमचन्द ने किसानों की मुक्ति के संदर्भ के रूप में लिया था, जो कि स्वाधीनता के दोहरे अर्थ को उजागर करता है, क्योंकि प्रेमचन्द जहां एक ओर यह चाहते थे कि भारत अंग्रेजी दासता से मुक्ति प्राप्त करे तो दूसरी ओर स्वाधीन भारत के किसानों को भी वे जमींदारों की गुलामी से मुक्त देखना चाहते थे।

सामन्तवाद से व्यापक भारतीय समाज की मुक्ति

प्रेमचन्द ने स्वाधीनता का तीसरा प्रमुख आशय सामंतवाद के व्यापक प्रभाव से भारतीय समाज की मुक्ति के संदर्भ में लिया, क्योंकि प्रेमचन्द इस तथ्य से भली-भांति अवगत थे कि सामंती व्यवस्था के कारण समाज में व्याप्त वर्ण-भेद के कारण अन्य किसी भी प्रकार की राजनीतिक स्वाधीनता प्रभावी नहीं हो सकती हैं, क्योंकि जातिभेद अच्छे लोकतंत्र की स्थापना संभव नहीं होने देता है।

स्त्रियों की स्वाधीनता

स्वाधीनता का चौथा महत्त्वपूर्ण आशय ग्रहण करते हुए प्रेमचंद ने यह स्पष्ट किया था कि समाज की स्त्रियों को पूर्ण स्वाधीनता प्रदान किए बिना कोई भी अन्य स्वतंत्रता अपूर्ण ही मानी जाएगी, क्योंकि किसी भी समाज के अपेक्षित विकास तथा उन्नति के लिए स्त्रियों की पुरुष वर्चस्ववादी मानसिकता की शृंखलाओं से मुक्ति अत्यंत आवश्यक है।

दलित मुक्ति

समाज में परंपरागत रूढ़ियों के आधार पर प्रचलित छुआछूत की भावना को हमेशा के लिए समाप्त करने को प्रेमचन्द ने स्वाधीनता को एक अन्य महत्त्वपूर्ण आशय के रूप में ग्रहण किया था। प्रेमचन्द ने अपने जीवन के अंतिम दिनों के लेखन को दलित मुक्ति के प्रयास के लिए ही समर्पित कर दिया था।

ww.neerajbooks.com

ww.neerajbooks.com

दिमागी गुलामी से स्वाधीनता

मस्तिष्क या बौद्धिक स्वतंत्रता भी को प्रेमचंद ने स्वाधीनता का एक महत्त्वपूर्ण आशय माना था। उनके लिए सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक स्वाधीनता से पूर्व व्यक्ति को किसी भी प्रकार की मानसिक गुलामी से मुक्ति के रूप में ग्राह्य थी, क्योंकि राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक स्वाधीनता के लिए सर्वप्रथम व्यक्ति की दिमागी स्वाधीनता आवश्यक शर्त है।

मजदूरों की शोषण-दमन से मुक्ति

प्रेमचन्द ने किसानों की स्वाधीनता तथा शोषण-मुक्ति के साथ ही मजदूरों की स्वाधीनता का भी स्वप्न संजोया था इसलिए उन्होंने स्वाधीनता के एक अन्य आशय के रूप में मजदूरों की शोषण व दमन से मुक्ति का संदर्भ भी ग्रहण किया था, क्योंकि सभी प्रकार के शोषण से पूर्णत: मुक्त समाज ही एक सम्प्रभु राष्ट्र के रूप में स्थापित हो सकता है। अत: प्रेमचन्द की राष्ट्रवाद की अवधारणा पूर्ण रूप से स्वाधीनता के संदर्भ पर ही केन्द्रित है, क्योंकि स्वाधीनता के साथ-साथ ही राष्ट्रवाद का अर्थ भी उनके लिए उतना ही विस्तृत तथा व्यापक है। प्रेमचन्द की जब यह राष्ट्रधर्मी चेतना सामाजिक चेतना से संयुक्त होती है, तो वह मानवधर्मी बनकर प्रकट होती है।

स्वाधीनता आंदोलन का चित्रण

प्रेमचन्द ने अपनी अधिकांश कहानियों में स्वाधीनता आंदोलन का सजीव चित्रण किया है और उनके लिए स्वाधीनता का अर्थ विदेशियों को देश से बाहर करके आत्म-परिष्कार करना था। स्वाधीनता आंदोलन का चित्रण करते समय उन्होंने प्राय: अंग्रेजी कूटनीति तथा भारतीयों के प्रति उनका दृष्टिकोण, स्वराज के लिए किए जाने वाले प्रयास, स्वदेशी तथा शराबबंदी जैसे आंदोलनों में भाग लेकर संघर्ष करने वाले लोगों के साथ स्वाधीनता आंदोलन के प्रति सभी वर्गों के विचारों को भी उजागर किया है।

अपनी 'अधिकार चिंता' कहानी में जानवरों के माध्यम से प्रेमचन्द अंग्रेजों की कूटनीति का खुलासा करते हुए चलते हैं, जिसमें टामी भी अंग्रेजों की 'फूट डालो तथा शासन करो' की नीति के अनुरूप ही आचरण करता हुआ प्रतीत होता है तथा जिसके बारे में प्रेमचन्द लिखते भी हैं कि इस प्रकार कूटनीति पर चलने वालों को चाँदी नहीं प्राप्त होती है और इस नीति पर चलते हुए उन्हें टामी की तरह से असफलता ही प्राप्त होती है।

प्रेमचन्द ने स्वाधीनता आंदोलन के चित्रण में अंग्रेजों की भारतीयों को हेय तथा निष्कृष्ट या कहें कि जानवरों से भी बदतर समझे जाने वाली दृष्टि को उजागर करते हुए ऐसी दृष्टि के पक्ष में एक प्रकार की सार्थक घृणा की भावना को उत्पन्न करने का सफल प्रयास करते हुए दिखाई देते हैं। इसी के उदाहरणस्वरूप उनकी 'पत्नी से पति' नामक कहानी को लिया जा सकता है, जिसमें पति अंग्रेज सरकार का तो पत्नी कांग्रेस की समर्थक है। एक दिन पत्नी जब कांग्रेस के जलसे में भागीदारी करने के साथ दो सौ रुपये चंदा भी देती है, तो यहां प्रेमचन्द पति के हिन्दुस्तानी होने पर शर्मिंदा होने तथा पत्नी को हिन्दुस्तानी होने पर गौरव अनुभव करने की बात के आधार पर इन दोनों के चरित्र को उजागर करने का प्रयत्न करते हैं। इस कहानी में पत्नी अपने पति की अवहेलना तथा तिरस्कार करते हुए अपनी कटु बातों के आधार पर उसके हिन्दुस्तानी होने पर गर्व न करने की भावना को उजागर करती है, तो यहां प्रेमचन्द वास्तव में 'पति' जैसे टुच्चे व चमचे व्यक्तित्व चरित्र को सामने लाने का प्रयास करते हैं। इस कहानी में एक स्थान पर 'पति' को अंग्रेज अधिकार से गाली सुनते हुए भी दिखाया गया है, जिसके माध्यम से प्रेमचन्द यह दर्शाना चाहते हैं कि अपने हिमायती लोगों के प्रति जब अंग्रेजों का व्यवहार इतना कटु है, तो अन्य भारतीयों के प्रति उनका अत्यंत अमानवीय व्यवहार होना स्वाभाविक ही है।

'इस्तीफा' कहानी में भी 'फतहचन्द' नामक पात्र के चरित्र तथा उसके व्यवहार के माध्यम से प्रेमचन्द ने अंग्रेजी शासन के समर्थक तथा अपने भारतीय लोगों के प्रति उपेक्षा को उजागर किया है। इसके माध्यम से प्रेमचन्द का वास्तविक उद्देश्य अंग्रेजों के द्वारा किए जाने वाले अमानवीय व्यवहार के प्रति अंग्रेजी शासन के समर्थक लोगों के मन में घृणा की भावना उत्पन्न करना तथा स्वाधीनता की लड़ाई में तेजी लाकर भारत को शीघ्र ही स्वतंत्र कराना था।

'दीक्षा' नामक कहानी में भी अंग्रेज जज एक भारतीय वकील को बहुत-सी गालियां देते हुए दिखाया गया है तथा इसके साथ ही शराबखोरी की आदत को भी अंग्रेजी शासकों द्वारा अमानवीय आचरण करने के लिए बाध्य होने का मुख्य कारण दर्शाया गया है। 'शूद्रा' कहानी के माध्यम से अंग्रेज एजेंट द्वारा अपने जाल में फंसाकर लाई हुई स्त्रियों को अंत में अपनी वासना का शिकार बनाने की वास्तविकता को प्रेमचन्द अंग्रेजों द्वारा फैलाई गई इस अफवाह के जबाव स्वरूप दर्शाते हैं, जिसमें अंग्रेजों ने बाहर की दुनिया में भारतीयों के अधिक बर्बर होने की बात का प्रचार किया। 'कर्मभूमि' में भी मुन्नी के साथ अंग्रेजों द्वारा किए गए बलात्कार के प्रसंग को भी इसी संदर्भ में लिया जा सकता है।

'जेल' कहानी के माध्यम से जहां प्रेमचन्द अंग्रेजी शासन के विरोध हेतु एकजुटता की आवश्यकता को दर्शाते हुए 'मृदुला' के माध्यम से जिस भावना को अभिव्यक्त करते हैं, वह दिनोंदिन अमानवीय होती जा रही अंग्रेज सरकार का पूरा कच्चा चिट्ठा खोल देती है, जिसमें भारतीय लोगों में आत्मसम्मान तथा एकता के अभाव की स्थिति को उजागर किया है। इन कहानियों के माध्यम से प्रेमचन्द भारतीयों को अंग्रेजों के विरुद्ध एकजुटता के साथ खड़े होने का कौशल सिखा रहे हैं।

'चकमा' नामक कहानी में भी प्रेमचन्द ने स्वदेशी आंदोलन के दौरान किए जाने वाले अपने ही भारतीय लोगों के विश्वासघात को दर्शाया है, जिसका पात्र 'चन्दूमल' कांग्रेसियों का विश्वासपात्र होने के बावजूद उनके ही विरुद्ध गवाही दे देता है। इस प्रकार की कहानियों के आधार पर प्रेमचन्द तत्कालीन समाज के लोगों के आत्ममूल्यांकन की प्रवृत्ति को उजागर करते हैं। 'शान्ति' कहानी की नायिका श्यामा हालांकि एक बार तो अपने पति की प्रेरणा के कारण आधुनिका बन जाती है, किन्तु इस आधुनिकता की वास्तविकता को जानते ही वह पुन: अपने पुराने रूप को ग्रहण करके चरखा चलाना शुरू करती है, तो समाज के वही लोग जो उसे आधुनिका बनने पर सम्मान की दृष्टि से देखते थे, चरखे को लेकर हीनता

ww.neerajbooks.com

ww.neerajbooks.com

बोध से ग्रस्त रहते हैं। अत: इन कहानियों के माध्यम स्वाधीनता आंदोलन के दौरान स्वदेशी अपनाने के व्रत को धारण करने की भावना के साथ अपने लोगों की स्वदेशी के प्रति हेय मानसिकता को उजागर करने का प्रयास भी बखूबी करते हैं।

प्रेमचन्द ने अपनी अधिकांश रचनाओं में अंग्रेजों द्वारा भारतीयों को दोयम दर्जे का नागरिक भी न मानकर उन्हें मात्र गुलाम माने जाने की भावनाओं को उजागर किया है। उनकी इसी मनुष्य विरोधी भावना का वर्णन करते हुए प्रेमचन्द इससे भी आगे बढ़ते हुए स्वराज के लिए किए जाने प्रयत्नों का वर्णन अपनी 'समर यात्रा' में करते हैं, जिसमें 'नोहरी' का चरित्र-चित्रण उनकी कलात्मकता तथा संवेदनशीलता का जीता-जागता प्रमाण है। उसमें वृद्धा होने के बावजूद अत्यधिक उत्साह है तथा वह सत्याग्रहियों का पूरा-पूरा साथ देती हुई अपने वक्तव्यों के माध्यम से भारतीयों के हृदय में सुप्त गौरव भावना को जागृत करने का कार्य करती है, तो 'जुलूस' कहानी में भी नायक इब्राहिम अली को देशहित में प्राण देने वाले तथा बीरबल सिंह द्वारा पत्नी के स्वाधीनता आंदोलन में भाग लेने पर बाधा खड़ी करने की स्थिति को प्रेमचन्द दर्शाते हैं।

प्रेमचन्द इस तथ्य को स्पष्ट रूप से रेखांकित करते हैं कि स्वाधीनता आंदोलन में सफलता प्राप्त करने के लिए भारतीयों में अंग्रेजों के विरोध के लिए एकता होनी अनिवार्य है, क्योंकि विभाजित होकर कोई भी लड़ाई जीती नहीं जा सकती है। 'जेल' कहानी इसका सशक्त प्रमाण है।

प्रेमचन्द ने अपनी कहानियों के माध्यम से भारतीय जनता के पूर्ण स्वराज प्राप्त करने की भावना को विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार तथा स्वदेशी को अपनाने के संदर्भ को प्रस्तुत किया है। 'सुहाग की साड़ी', 'पत्नी से पति', 'तावान', 'चकमा', 'आहुति', 'शांति', 'दीक्षा', 'शराब की दुकान' तथा 'मैकू' आदि कहानियों में स्वदेशी आंदोलन को राष्ट्रीय व्रत के रूप में चित्रित किया गया है। इसके साथ ही इन कहानियों में शराबबंदी के साथ नारियों की उत्सर्ग भावना को चित्रित करके प्रेमचन्द ने स्वाधीनता आंदोलन के चित्रण में अपनी रचना कला का एक उदात्त रूप प्रस्तुत किया है।

राष्ट्रवाद का चित्रण

प्रेमचन्द एक ऐसे रचनाकार थे, जो स्वाधीनता जैसे गंभीर विषय पर बेहद ही सर्तक तथा आलोचनात्मक समीक्षा को ग्रहण करके उसे बखूबी चित्रित करने में सक्षम थे। प्रेमचन्द ने अपनी कहानियों के माध्यम से राष्ट्रवाद की भावना के व्यापक परिप्रेक्ष्य में भारतीयों के एकजुट होने तथा पूर्ण स्वाधीनता को प्राप्त करने के मध्य आने वाली कुछ समस्याओं तथा कमजोरियों को उजागर करके उन्हें दूर करने के उपायों का चित्रण 'कानूनी कुमार', 'सती', समर-यात्रा', 'आहुति', 'मैकू', 'हिंसा परमो धर्म:', 'जिहाद', 'मुक्ति धन' एवं 'पंच-परमेश्वर' जैसी कहानियों में किया है।

स्वाधीनता आंदोलन में सफलता प्राप्त करने के लिए यह अनिवार्य था कि लोग धार्मिक कट्टरताओं की सीमा रेखा से निकलकर संकीर्ण राष्ट्रवादी दृष्टि का परित्याग करें इसीलिए प्रेमचन्द ने भारतीय स्वाधीनता-संग्राम के दौरान विकसित होने वाली संकीर्ण राष्ट्रवादी भावनाओं को केन्द्र बनाकर 'आहुति' तथा 'बौड़म' जैसी कहानियां लिखी हैं। 'आहुति' नामक कहानी में प्रेमचन्द ने स्वयंसेवकों के त्याग का वर्णन करते हुए इसकी नायिका द्वारा अत्यंत गहराई तक बेधने वाला प्रश्न स्वराज के संदर्भ में खड़ा किया है। 'बौड़म' कहानी में मालदार लोगों के साथ ही एक बड़ा शोषित वर्ग भी आजादी के दीवानों को बौड़म ही समझता है। प्रेमचन्द ने इस कहानी में यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि शोषित मध्यवर्ग भी अपने स्वार्थ को सिद्ध करने के लिए शासकों द्वारा दिए जाने वाले प्रलोभनों को प्राप्त करने के लिए अपने देश के लोगों के साथ धोखा भी कर सकता है।

'ब्रह्म का स्वांग' नामक कहानी में प्रेमचन्द उसके प्रमुख पात्र के माध्यम से अपने संशयों को भी एक ठोस आधार प्रदान करते हैं। इस कहानी का नायक स्त्रियों द्वारा राष्ट्रीय संघर्ष में सम्मिलित होने की बात के कारण दिखावे के लिए स्वयं भी इस आंदोलन में शामिल होने की बात कहता है, तो उसकी संकीर्ण विचारों की पत्नी, जो छुआछूत की भावना में अत्यधिक विश्वास करती है, वह भी पति का हृदय परिवर्तन होते ही अपनी सुध-बुध विस्मृत करके तन-मन से देश की सेवा करती है तथा अछूतों को घर में सम्मान देने लगती है, किन्तु यह बात उसके पति को अच्छी नहीं लगती है और वह दिखाने के लिए स्वाधीनता आंदोलन में भी राष्ट्रीयता के नाम पर अपना स्वार्थ सिद्ध करने की कोशिश करता है, जो कि अपने वर्चस्व को दृढ़ रखने के लिए अनेक प्रकार की साजिशों में शामिल होता है। प्रेमचन्द के लिए यह एक प्रकार का चिन्ता का विषय है कि इस देश के समृद्ध जमींदार, राजे-रजवाड़ों से संबंधित लोग तथा आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न व्यक्ति अपने ही देश के गरीब भाइयों की उन्नति तथा उसके विकास के बारे में कुछ भी नहीं सोचते हैं। 'आहुति' तथा 'ब्रह्म का स्वांग' नामक कहानियों के साथ ही प्रेमचन्द ने अपने उपन्यास 'गबन' में भी इन्हीं विचारों को 'देवीदीन' के माध्यम से अभिव्यक्त किया है।

प्रेमचन्द एक उन्नतिशील राष्ट्रवाद के मार्ग में जाति व्यवस्था की मानसिकता को अत्यंत हानिकारक मानते थे इसलिए वे जाति व्यवस्था को समूल उखाड़ फेंकना अपना प्रमुख उद्देश्य मानते थे। इसकी अनिवार्यता को दर्शाने के लिए 'सौभाग्य के कीड़े' नामक कहानी में प्रेमचन्द यह चित्रित करते हैं कि ब्राह्मण होने के लिए ब्राह्मण के घर में पैदा होना आवश्यक नहीं है। वास्तव में व्यक्ति अपने शील, विनय तथा आचार, प्रेम व विद्या आदि गुणों के आधार पर ही ब्राह्मण कहलाने के लिए योग्य है। 'मुक्ति-मार्ग' कहानी में भी प्रेमचन्द धार्मिक विद्वेष को भुलाकर आपसी प्रेम-भावना तथा भाईचारे की भावना को बनाये रखने का समर्थन करते हुए प्रतीत होते हैं, क्योंकि धार्मिक विद्वेष, अंधविश्वास तथा कुरीतियां राष्ट्र की प्रगतिशीलता के मध्य बहुत बड़ी बाधा हैं। 'दीक्षा' कहानी के माध्यम से प्रेमचन्द राष्ट्र के नेतृत्व करने वाले लोगों के गंभीर आचरण तथा उन्हें आदर्श बन रहने की भावना को व्यक्त करते हैं, किन्तु यदि नेतृत्वकारी व्यक्ति ही स्वयं पर नियंत्रण नहीं रख सकेंगे तो वे स्वयं के साथ-साथ दूसरों के विनाश को भी आमंत्रित करेंगे। अत: प्रेमचन्द कथनी व करनी में समानता के हिमायती थे। इस प्रकार प्रेमचन्द ने अपनी अधिकांश कहानियों में राष्ट्रवाद की व्यापकता के साथ ही उसमें व्याप्त संकीर्णता की भावना को भी गंभीरता के साथ दर्शाया है।

ww.neerajbooks.com

ww.neerajbooks.com

स्वाधीनता आंदोलन और राष्ट्रवाद का अन्त:संबंध

प्रेमचन्द स्वाधीनता आंदोलन के सच्चे साधक थे, अत: उनका अधिकांश लेखन किसी-न-किसी रूप में इन्हीं के साथ प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ था। उनकी यह इच्छा थी कि भारतीय स्वतंत्र होकर अपने समतामूलक सिद्धांत के आधार पर अपना विकास स्वयं करें, जिसे उन्होंने सन 1930 ई. में पं. बनारसीदास चतुर्वेदी को लिखे एक-एक पत्र में अभिव्यक्त किया था, जिनका प्रकाशन मई सन 1999 में 'हंस' पत्रिका में हुआ था।

प्रेमचन्द अपने लेखन के माध्यम से स्वाधीनता-संग्राम के एक प्रतिबद्ध सिपाही के रूप में प्रकट होते हैं। प्रेमचन्द के लेखन के समय ही स्वाधीनता आंदोलन अपने चरम रूप में विद्यमान था और इसकी बड़ी सफलता के उपरांत राष्ट्रवाद एक अनिवार्य शस्त्र बनकर सामने उभरा। यह राष्ट्रवाद का वही एक रूप था, जिसमें लाखों लोग 'भारतमाता की जय' का उद्घोष करते हुए राष्ट्रीय आंदोलन में सब कुछ त्यागकर कूद पड़े थे और सबका एकमात्र लक्ष्य था अपने देश भारत को अंग्रेजी दासता से मुक्त कराना। इसके लिए यह आवश्यक था कि साहित्यकार भारत में रहने वाले लोगों के मन में देश के लिए मर-मिटने की भावना को उत्पन्न करें और यही कार्य प्रेमचन्द ने राष्ट्रवाद के अर्थ में स्वाधीनता आंदोलन से एक नया अर्थ प्राप्त करते हुए अपनी कहानियों के माध्यम से राष्ट्रवाद तथा स्वाधीनता संग्राम को एक ही सिक्के के दो पहलुओं के रूप में चित्रित करने का प्रयास किया। इसी आधार पर उन्होंने 'पत्नी से पति', 'समर-यात्रा' एवं 'जुलूस' जैसी कहानियों में राष्ट्रवाद का आश्रय स्वाधीनता आंदोलन को बल देने के लिए किया है। इसका एक उदाहरण 'समर-यात्रा' कहानी में सत्याग्रहियों द्वारा गाया जाने वाला यह गीत है

''एक दिन वह था कि हम सारे जहां में फर्द थे,
एक दिन यह है कि हम-सा बेहया कोई नहीं।
एक दिन वह था कि अपनी शान पर देते थे जान,
एक दिन यह है कि हम-सा बेहया कोई नहीं।''

इस प्रकार से 'नोहरी' भी राष्ट्रवाद की भावना से भरी हुई स्वाधीनता आंदोलन की सफलता की कामना करती है, तो 'आहुति' की नायिका भी ऐसी स्वाधीनता का स्वप्न संजोती है, जिसके आधार पर एक समतामूलक समाज का निर्माण किया जा सके तथा जिसमें किसी के साथ ऊँच-नीच का कोई भेदभाव न हो इसलिए 'आहुति' की यह नायिका संकीर्ण राष्ट्रवाद का सशक्त विरोध करती हुई प्रतीत होती है तथा इस संकीर्ण राष्ट्रवाद को ही प्रेमचन्द ने आधुनिक समाज का एक कोढ़ भी माना था, क्योंकि राष्ट्रवाद उनके लिए उतना ही मान्य था कि जबकि वह एक स्वाधीनता आंदोलन को एक शक्ति प्रदान करता है तथा इससे अधिक सीमा तक वे उसे आलोचनात्मक दृष्टि से ही देखते थे। अत: इस राष्ट्रवाद के रूप में उन्होंने अपनी कहानियों में एक प्रगतिशील विचारधारा को आकार प्रदान किया है।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. प्रेमचन्द की कहानियों में चित्रित स्वाधीनता आंदोलन पर प्रकाश डालिए।

उत्तर प्रेमचन्द ने अपनी अधिकांश कहानियों में मुख्य रूप से स्वाधीनता आंदोलन का अत्यन्त सजीव चित्रण किया है और उनके लिए स्वाधीनता आन्दोलन का अर्थ था विदेशियों को अपने देश से भगाकर आत्म परिष्कार की भावना को विकसित करना। इसी स्वाधीनता आंदोलन का चित्रण करते हुए उन्होंने अपने लेखन में अंग्रेजों की कूटनीति के साथ ही भारतीयों के प्रति उनकी संकीर्ण दृष्टि तथा स्वराज के लिए होने वाले प्रयासों, स्वदेशी आंदोलन में भाग लेकर संघर्ष करने वालों, शराबबन्दी आंदोलन और स्वाधीनता आंदोलन के प्रति विभिन्न वर्गों के लोगों के विचारों को भी अत्यन्त सहजता के साथ चित्रित किया है।

'अधिकार चिन्ता' नामक कहानी में 'प्रेमचन्द जानवरों के माध्यम से अंग्रेजों की 'फूट डालो राज करो' के सिद्धान्त का खुलासा करते हैं। उनकी तरह ही उनका कुत्ता टामी भी चलता है इसलिए प्रेमचन्द लिखते हैं कि *''टामी ने एक नयी चाल चली। वह कभी किसी पशु से कहता, तुम्हारा फलां शत्रु तुम्हें मार डालने की तैयारी कर रहा है। किसी से कहता फलां तुमको गाली देता था। जंगल के जन्तु उसके चकमे में आकर आपस में लड़ जाते और टामी की चांदी हो जाती।''* लेकिन प्रेमचन्द इस बात को भली-भांति जानते थे कि इस प्रकार से कोई व्यक्ति अपने ही लोगों को लड़ाकर सशक्त नहीं हो सकता और इस प्रकार की कूटनीति का आचरण करने वाले एक दिन टामी की तरह ही हार जाएंगे।

अपनी कहानियों के माध्यम से स्वाधीनता आंदोलन का चित्रण करते हुए प्रेमचन्द सबसे पहले अंग्रेजों की हिन्दुस्तानियों को प्राय: जानवर से भी हेय तथा निम्न समझने वाली अमानवीय दृष्टि का चित्रण करते हैं। प्रेमचन्द ने इस प्रकार की कहानियों के आधार पर अंग्रेजों की इस दृष्टि के प्रति सार्थक घृणा पैदा करने का सार्थक प्रयास किया। इसी संदर्भ में उनकी 'पत्नी से पति' शीर्षक कहानी को लिया जा सकता है, जिसमें पति अंग्रेज सरकार का हिमायती है और उसकी पत्नी कांग्रेस की पक्षधर है तथा पति को स्वयं के हिन्दुस्तानी होने पर शर्म आती है, लेकिन इसके विपरीत उसकी पत्नी को हिन्दुस्तानी होने का गर्व है। वस्तुत: प्रेमचद 'पति' जैसे स्वार्थी और खुशामदी व्यक्तित्व के चरित्र को सामने लाकर यह दिखाना चाहते थे कि इस देश में ऐसे कपूत भी मौजूद हैं प्रेमचन्द ने पति महोदय को अपने अंग्रेज ऑफिसर से बहुत-सी गाली सुनते हुए भी चित्रित किया है।

प्रेमचन्द की एक अन्य महत्त्वपूर्ण कहानी है 'इस्तीफा', जिसके नायक फतहचन्द एक दफ्तर में बाबू हैं तथा उनका अंग्रेज अधिकारी भारतीय लोगों को बात-बात पर गाली देता है और एक दिन वह हद कर देता है। स्वयं प्रेमचन्द के शब्दों में, *''साहब अब क्रोध को न बर्दाश्त कर सके। हण्टर लेकर दौड़े। चपरासी ने देखा, यहां खड़े रहने में खैरियत नहीं है, तो भाग खड़ा हुआ। फतहचन्द अभी तक चुपचाप खड़े थे। साहब चपरासी को न पाकर उनके पास आया और उनके दोनों कान पकड़कर हिला दिया। बोला तुम सूअर गुस्ताखी करता है?''* और इसके बाद आगे प्रेमचन्द यह लिखते हैं कि फतहचन्द दफ्तर के बाबू होने पर भी मनुष्य ही थे और एक मनुष्य के साथ अंग्रेज अधिकारी ऐसा अमानवीय करते थे। वस्तुत: प्रेमचन्द लोगों में इस व्यवहार के प्रति घृणा उत्पन्न कर स्वाधीनता की लड़ाई तेज कर भारत को जल्द ही अंग्रेजों की दासता से स्वाधीनता प्राप्त करवाना चाहते थे।

ww.neerajbooks.com